शोध–प्रभा (ISSN : 0974-8946)
(A REFERRED & PEER- REVIEWED QUARTERLY RESEARCH JOURNAL)

महिला उत्थान में शिक्षा का योगदान

गिरिजा शर्मा
शोधकत्री (शिक्षा), ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय
sgirija98@yahoo.com

डॉक्टर मंजू शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर,(शिक्षा विभाग), ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय
dean.edu@jvwu.ac.in

सार
शोध पत्र में **''महिला उत्थान में शिक्षा का योगदान''** देश व समाज में जब भी महिलाओं के उत्थान व शिक्षा के बारे में बात की जाती है। वर्तमान अध्ययन से संकेत मिलता है कि महिलाओं को अपनी विभिन्न शिक्षा समस्याओं के समाधान खोजने और अच्छी तरह से समायोजित नारी बनने के लिए प्रोत्साहित और निर्देशित किया जाना चाहिए। महिलाओं को तार्किक रूप से और गंभीर रूप से सोचने के लिए उचित ज्ञान व समझ होनी चाहिए की उनके उत्थान के लिए शिक्षा ही एकमात्र तरीका है क्योंकि शिक्षा से ही पारिवारिक, आर्थिक व सामाजिक विकास किया जा सकता है और महिलाओं का सशक्तिकरण हर क्षेत्र में किया जा सकता है। महिलाओं को घर, समाज और उनके समुदाय में अच्छी तरह से समायोजित करने के लिए अध्ययन उपयोगी आवश्यक सुविधाओं को उपलब्ध करवाना होगा। यह अध्ययन महिलाओं व बालिकाओं के परिवारों व समाज के लिए मददगार होगा, वे अपनी घर व समाज की महिलाओं के उत्थान और समायोजन समस्याओं को समझेंगे और उच्च शिक्षा को प्राप्त करने में उनकी मदद करेगें।

मुख्य शब्दावली: शिक्षा, उत्थान, सशक्तिकरण, समायोजन, व्यवसाय, पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक कार्य।

प्रस्तावना
शिक्षा वस्तुतः हमारे जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण है। शिक्षा व्यक्ति द्वारा समाज के बारे में उस सोचे समझे प्रयत्न का नाम है जिसे वह इसलिए ग्रहण करता है ताकि मनुष्य का अस्तित्व शेष रहे तथा व्यक्तियों में यह सामर्थ्य उत्पन्न हो कि वे बदले हुए वातावरण के साथ सामाजिक जीवन में भी उचित एवं आवश्यक परिवर्तन कर सके। राष्ट्रीय–जीवन में शिक्षा मनुष्य के बिते हुए समय व वर्तमान को जोड़ती है जो 'समाज शिक्षा' का प्रबन्ध ठीक नहीं रख पाता है, वह अपने अस्तित्व को संकट में डालता है। जिस प्रकार स्मरण शक्ति के समाप्त हो जाने पर जीवन का गणित बिगड़ जाता है, उसी प्रकार शिक्षा के बिगड़ जाने पर राष्ट्रीय जीवन का क्रम बिगड़ जाता है। शिक्षा व्यक्ति के मानसिक विकास एवं सामाजिक विकास का नाम है। जिस प्रकार मनुष्य का शरीर छोटे से अंकुर से प्रारम्भ होता है और उचित भोजन एवं वातावरण प्राप्त कर मनुष्य का निर्माण करता है।

शिक्षा का अर्थः– शिक्षा, मनुष्य को सभ्य एवं विवेकशील बनाने का एक माध्यम है। यह उचित व अनुचित में भेद करना सिखाती है इसलिए शिक्षा के बिना मनुष्य का जीवन का विकास अधुरा है।

शिक्षा बालक की सर्वांगीण उन्नति का साधन है, उसके व्यक्तित्व के पूर्ण विकास का सोपान है। शिक्षा वह ज्ञान है, जो बालक रूपी हीरे की जन्मजात शक्तियों का विकास करके उसके आन्तरिक गुणों को जगमगा देती हैं। जिसके प्रकाश से व्यक्ति स्वयं अपने व्यक्तित्व का निर्माण करता है और समाज को लाभ पहुँचता है। शिक्षा प्रकाश और शक्तियों का ऐसा स्रोत माना जाता है कि हमारे शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों के प्रगतिशील और सुसंगत विकास द्वारा हमारी प्रकृति को ही बदल देती है तथा उदात्त बनाती है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य को सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। इस तरह शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। इसके द्वारा व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र सभी का विकास होता है। सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था का केन्द्र बिन्दु शिक्षक होता है। शिक्षा हम सभी के उज्ज्वल भविष्य के लिए आवश्यक साधन है। हम जीवन में शिक्षा के इस साधन का प्रयोग करके अपने जीवन में अच्छे से अच्छा स्थान प्राप्त कर सकते हैं। शिक्षा का उच्च स्तर, लोगों को सामाजिक और पारिवारिक आदर और एक अलग पहचान बनाने में मदद करता है। शिक्षा सभी के लिए सामाजिक और व्यक्तिगत रुप से बहुत महत्वपूर्ण होती है। यह एक व्यक्ति को जीवन में एक अलग स्तर और अच्छाई की भावना को विकसित करती है। शिक्षा किसी भी बड़ी पारिवारिक, सामाजिक और यहाँ तक कि राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को भी हल करने की क्षमता प्रदान करती है।यह लोगों की सोच में सकारात्मक सोच का विकास करके विचारों में बदलाव लाती है और नकारात्मक विचारों को हटाती है। बचपन में ही हमारे माता–पिता हमारे मस्तिष्क को शिक्षा की ओर ले जाने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अपने कौशल और ज्ञान को उपयोगी बनाने में ये विचार भी हमारी सहायता करते हैं।

शिक्षा के उद्देश्य :–

इस अध्ययन से कई मौलिक उद्देश्यों की पूर्ति की संभावनाएँ बनती है। एक तो समाज व देश में महिलाओं की स्थिति को बदला जा सकता है और यह बदलाव शिक्षा के माध्यम से ही हो सकता है। महिलाओं व बालिकाओं की शिक्षा व उत्थान के लिए समाज में चेतना के वैचारिक व सांस्कृतिक अस्त्रों की खोज हो सकती है। समाज में महिलाएँ शिक्षित होकर अपना व परिवार का भविष्य संवार सकती है और अपना अस्तित्व बना सकती है। शिक्षा के उद्देश्य का व्यक्ति के जीवन तथा समाज के आदर्शो व उद्देश्यों से घनिष्ठ संबंध होता है। इसलिए शिक्षा के उद्देश्यों का निर्माण करना भी ठीक ऐसे ही है जैसे जीवन के उद्देश्यों को निर्धारित करना। यदि हम व्यक्ति तथा समाज दोनों के लिए अलग–अलग शिक्षा के उद्देश्य का निर्माण करना चाहें, तो हम दोनों की आवश्यकताओं तथा आदर्शो को ध्यान रखना होगा। परिस्थिति के अनुसार लोगों की जैसी आवश्यकता तथा अकाक्षाएँ होती है। शिक्षा के उद्देश्य में उसी के अनुसार परिवर्तन होता है।

वर्त्तमान में शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैः–

1.जीविकोपार्जन हेतु व्यवसायिक शिक्षा देना
2.बौद्धिक विकास
3.पूर्णजीवन की तैयारी
4.संतुलित विकास
5.धार्मिकता, सामाजिक व नैतिकता चारित्रिकता का स्त्रोत बनाना

4.स्त्रियों का सर्वांगीण व्यक्तित्व का विकास
5.सांस्कृतिक प्रसार रखने हेतु दीक्षा
6.शिक्षा और वातावरण की व्यवस्था उत्तरदायित्व की भावना का विकास
7.लोकतांत्रिक भारत में नागरिकता की शिक्षा इत्यादि उद्देश्य है।

हिटलर के अनुसार–''उस समय जर्मनी की शिक्षा का उद्देश्य वहाँ की जनता में अपने देश के प्रति श्रद्धा, अपारभक्ति तथा त्याग की भावना को ही विकसित करना था।''

प्रयोजनवादी विचारधारा के अनुसार–''सत्य सदैव बदलता रहता है, इसलिए शिक्षा के उद्देश्य भी सदैव देश, काल तथा परिस्थितियों के अनुसार बदलते रहते है।''

यर्थाथवादी के अनुसार– ''वह भी प्रयोजनवादीयों की भांति समाज की निमनलिखित भौतिक परिस्थितियों को आधार मानते हुए शिक्षा के लचीले, अनुकूलन योग्य तथा परिर्वतनशील विशिष्ट उद्देश्य का निर्माण करते है।''

सर पर्सी नून– (1870–1942) जैसे शैक्षिक विचारक इस बात की वकालत करते हैं कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्तिगत व्यक्तित्व का विकास है। महान राष्ट्रों की प्रगति व्यक्तियों के कारण होती है। इसलिए व्यक्तित्व को पूर्णता के लिए पूर्ण अवसर दिया जाना चाहिए।

एडम्स यह भी कहते हैं– ''कि शिक्षा आत्म–साक्षात्कार के लिए एक की मदद करने का प्रयास है। शिक्षा व्यक्तियों के लिए दिया जाने वाला प्रशिक्षण है ताकि उनमें से प्रत्येक में निहित चारित्रिक क्षमता का विकास हो सके। सभी को एक ही सांचे में नहीं ढाला जा सकता है और सभी के लिए इस तरह की समान शिक्षा बेकार और निरर्थक है।''

शिक्षा बच्चों को तेजी से बढ़ते ज्ञान के साथ तालमेल रखने और उन्हे ज्ञान की खोज करने में मदद करने में सक्षम बनाती है। शिक्षा मनुष्य के सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया है। प्राचीन शिक्षा ने मानसिक विकास पर जोर दिया। अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करना मुख्य उद्देश्य के रूप में माना जाता था। इसके विपरीत, आधुनिक शिक्षाविदों ने शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक जैसे विकास के अन्य पहलुओं पर समान रूप से जोर दिया। इस प्रकार आधुनिक शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तित्व को पूर्ण विकसित करना और सामाजिक दक्षता और गतिशीलता प्राप्त करना है। शिक्षा के उद्देश्यों में व्यक्तिगत के साथ–साथ सामाजिक भी शामिल हैं। सामाजिक पुनर्निर्माण, सामाजिक परिवर्तन पर जोर देना, समाज को आधुनिक बनाने के लिए उत्पादक सहभागी, मूल्य उन्मुखता और राष्ट्र के संवैधानिक दायित्वों के लिए प्रतिबद्धता है।

भारत में महिला शिक्षा–

भारत में महिलाओं ने सभ्यता की स्थापना के बाद से अच्छी स्थिति का अनुभव किया है। महिलाओं उत्थान व शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षित हुए बिना देश और समाज का विकास नहीं कर सकती। यह तथ्य सत्य है की महिला और पुरुष दोनों मिलकर ही देश को हर क्षेत्र में पूर्ण रूप से विकसित कर सकते है। महिलाओं की शिक्षा समाज में उनकी स्थिति के परिवर्तन का सबसे शक्तिशाली साधन है। शिक्षा भी परिवार के भीतर महिलाओं की स्थिति में सुधार के साधन के रूप में, असमानताओं और कार्य में कमी लाती है। भारत में प्राचीन दिनों में महिलाओं को कुछ अधिकार दिए गए थे। प्राचीन भारत में

महिला शिक्षा में वृद्धि हुई। प्राचीन भारत में महिलाओं की स्थिति महत्वपूर्ण थी। वे महत्वपूर्ण निर्णय लेती थी और उन्हे ''स्वयंवर'' के माध्यम से वर चुनने का अधिकार प्राप्त था। महिला का सम्मान किया जाता था और उसे समाज में उचित महत्त्व दिया जाता था। वैदिक काल में प्राचीन भारत में नारी शिक्षा प्रचलित थी। प्राचीन काल में भारतीय महिलाओं को महत्त्व दिया जाता था। प्राचीन भारत में बड़े पैमाने पर महिला शिक्षा के माध्यम से गार्गी और मैत्रेयी जैसे प्राचीन काल में कई महिला द्रष्टाओं और विचारकों की उत्पत्ति हुई। वाल्मीकि की रामायण में सीता के प्रभाव को दर्शाया गया है। वेद व्यास द्वारा महाभारत में कौरवों को उखाड़ फेंकने के लिए पतियों पर द्रौपदी के अनुनय का चित्रण करता है। प्राचीन भारत में महिला शिक्षा ने महिलाओं को महत्त्वपूर्ण अधिकार दिया। प्राचीन भारतीय ग्रंथ समाज में महिलाओं के प्रभाव का वर्णन करते है।

महिला शिक्षा की महत्ता

''एक पुरुष के शिक्षित और सुसंस्कृत होने का अर्थ है अकेले उसी का उपयोगी बनना किन्तु एक महिला यदि शिक्षित, समझदार और सुयोग्य है तो समझना चाहिये कि पुरे परिवार के संसंस्कृत बनने का सदृण आधार बन गया''

स्वामी दयानन्द सरस्वती

महिलाओं को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यकता है शिक्षित बनने की है, शिक्षा ही महिलाओं में आत्मविश्वास पैदा कर सकती है। शिक्षित होने पर ही उनमें किसी क्षेत्र में सफलतापूर्वक काम करने व आगे बढ़ने की क्षमता विकसित हो सकती है। यद्यपि महिलाएँ प्रशासन, शिक्षण, चिकित्सा, विज्ञान, राजनीति आदि क्षेत्रों में आगे आई हैं और अच्छा काम कर रही है। वे पुलिस और सेना में भी काम कर रही है किन्तु उनकी संख्या अभी बहुत कम है शिक्षा में अवसरों के विस्तार से विभिन्न क्षेत्रों में उनकी उपस्थिति निःसंदेह बढ़ेगी। शिक्षा से ही महिलाएँ शक्ति अर्जित करेगी। शिक्षित और सशक्त महिलाएँ देश व समाज को भी शक्तिशाली बनाएँगी।

महिला शिक्षा से उत्थान

''जिद है एक सूर्य उगाना है
अम्बर से ऊँचे जाना।''

''शिक्षा के बिना नारी उत्थान संभव नहीं। शिक्षा ही इनकी मुक्ति का द्वार है।''

सावित्री बाई फुले

महिलाओं के उत्थान व सशक्तीकरण की राष्ट्रीय नीति 2001 में पारित की गयी थी। भारत सरकार ने 2001 को महिलाओं के सशक्तीकरण (स्वशक्ति) वर्ष के रूपमें घोषित किया था। ग्रामीण महिलाओं के उत्थान के उद्देश्य के लिए लागू की गई शुरुआती आर्थिक नीतियां काफी हद तक असफल रही। एकीकृत ग्रामीण विकास कार्य{म की उप–योजना ग्रामीण क्षेत्रों में महिला व बालिकाओं के विकास (ॅब्ंᅵ) का कार्य 1982–83 में 50 ग्रामीण जिलों में शुरू किया गया। भारत में महिलाएँ अब सभी तरह की गतिविधियाँ जैसे–शिक्षा, राजनीति, मीडिया, कला और संस्कृति, सेवा का क्षेत्र, चिकित्सा व विज्ञान, , अभियन्ता, विधि विभाग, विज्ञान एवं प्रौधोगिकी आदि में हिस्सा ले रही है। महिलाओं के उत्थान में क्रांति–ज्योति को ओर आगे प्रज्ज्वलित करने में संस्थापक पंकज गर्ग जी की भूमिका भी महत्त्वपूर्ण रही है। 21वीं सदी में महिलाओं को शिक्षित करने का जो अलख जगाया, आज उसी का परिणाम है

कि भारत की महिलाएँ हर क्षेत्र में पुरूषों से कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है।

मावन समाज के दो पक्ष है–स्त्री और पुरुष प्राचीन काल से ही पुरुषों को स्त्री से अधिक अधिकार प्राप्त रहें है। स्त्री को पुरुषों के नियंत्रण में रहना पड़ता है। नारी स्वतंत्रता के योग्य नहीं', कहकर स्मृतिकार मनु ने स्त्री को बन्धन में रखने का मार्ग खोल दिया है। किन्तु वर्तमान शताब्दी प्राचीन रूढ़ियों को तोड़कर आगे बढ़ने का समय है। स्त्री भी पुराने बन्धनों से मुक्त होकर आगे बढ़ रही है। समाज के उत्थान एवं राष्ट्र निर्माण में नारी की अहं भूमिका है। यह कहना अतिश्योक्ति न होगी कि नारी के बिना समाज का अस्तित्व, विकास, उत्थान तथा कल्याण असंभव है। वेदों में नारी गृह साम्राज्ञी है (ऋग्वेद), राष्ट्र के लिए ध्वजा है, समाज की मूर्धा है, शत्रु का संहार करने वाली वीरांगना है। इन सभी गुणों के लिए नारी का शिक्षित होना जरूरी है। शिक्षा ही वह कवच है जिसके माध्यम से स्त्री समाज में अपनी प्रतिष्ठा कायम रख सकती है।

निष्कर्षः–महिलाओं के उत्थान व शिक्षा के द्वारा महिलाओं को समाज और देश–दुनिया में अपनी बेहतर जगह बनाने में मदद मिलती है और साथ ही उनकी समावेशी भागीदारी के रास्ते पर चलने में सहायता करता है। शिक्षा द्वारा महिलाओं का परिवार व समाज में प्रभाव व स्थान निर्धारित होता है। शिक्षा ही जीवन है इस विचार के माध्यम से शहरी व ग्रामीण समाज में महिलाओं के उत्थान व शिक्षा के स्तर में काफी बदलाव होता है। लेकिन ग्रामीण समाज की महिलाओं के लिए अलग से विशेष योजनाएँ चलाई गयी है। ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं को शिक्षित करने के साथ–साथ उनके लिए रोजगार संबंधी अवसर भी बढ़ाये जाने चाहिए जिससे वे अच्छी अपना व अपने परिवार का पालन–पोषण में अपने साथी का सहयोग कर सके। सभी क्षेत्रों महिलाओं के उत्थान में राष्ट्र की प्राथमिकता में होना चाहिए। महिला व पुरुषों के बीच जो असमानता की खाई है वह शिक्षा के द्वारा ही दूर हो सकती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1.खंडेला, प्रोफेसर मान चंद्र'' महिला और बदलता सामाजिक परिवेश''आविष्कार पब्लिकेशन, जयपुर
2. शर्मा ,प्रज्ञा ,"महिला विकास और सशक्तिकरण" आविष्कार पब्लिकेशन ,जयपुर
3.कटारिया ,कमलेश, "नारी जीवनः वैदिक काल से आज तक" यूनिक ट्रेडर्स ,जयपुर
4. आप्ते, प्रभा (1996): "भारतीय समाज में नारी", क्लासिक पब्लिशिंग हाउस जयपुर अग्रवाल, 5.जे. सी. (1976): "इण्डियन वुमन एजकुशन एण्ड स्टैटस", आर्य बुक डिपो, न्यू देहली
6. भट्टाचार्य एस.(2001): "डवलपमेंट ऑफ वमुन एज्यूकेशन इन इण्डिया, जोसेफ बारा, चीना रॉय, 1850–1920, कलेक्शन ऑफ डाक्यूमेंटस", योनगती, बी.एम. शंखधर कनिष्का पब्लिशर, न्यू देहली
7. बी.एम.शर्मा (2005): "वुमन एण्ड एज्यूकेशन", कॉमन वेल्थ (एडिटर) पब्लिशर, न्यू देहली
8. द्विवेदी किरण (2009): "भारत की विश्वविद्यालयी व्यवसायिक शिक्षा में महिला सहभागिता", शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ
9. धामीजा, नीलम एण्ड पाण्डा एस.के. (2006): "वुमन एम्पावरमेंट प्रोएज्यूकेशन"; रोल ऑफ यूनिवर्सिटी, यूनिवर्सिटी न्यूज, 44 (27), जुलाई, 3–9, 2006
10. डॉ. डी. विनोद कुमार (2004): "वुमन एज्यूकेशन इन 21 सेंचुरी", मिरेकल ऑफ टीचिंग, क्वाटरली जनरल ऑफ टीचिंग, क्वाटरली जनरल ऑफ टीचिंग प्रोफेशन, वॉल्यूम टप्, जनवरी, फरवरी, मार्च, अप्रैल, 2004